INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in June 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

वैदिक पर्यावरण चेतना

श्रीमती राजकुमारी, सहआचार्य, संस्कृत, महारानी श्री जया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भरतपुर (राज०)

सारांश

वैदिक साहित्य में पर्यावरण को केवल प्राकृतिक संसाधनों का समूह नहीं, बल्कि मानव जीवन का आधार तथा समस्त सृष्टि के संतुलन का मूल तत्व माना गया है। वेदों में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, वनस्पति तथा समस्त जीव-जंतुओं के प्रति सम्मान, संरक्षण और संतुलित उपयोग का संदेश दिया गया है। वर्तमान समय में बढ़ते प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जैव विविधता के ह्रास तथा प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरणीय संकट गंभीर रूप ले चुका है। ऐसी स्थिति में वैदिक पर्यावरण चेतना का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य वैदिक साहित्य में निहित पर्यावरण संबंधी विचारों का विश्लेषण करना तथा आधुनिक पर्यावरण संरक्षण में उनकी उपयोगिता को स्पष्ट करना है। यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसमें वेदों, उपनिषदों, संबंधित ग्रंथों, शोध-पत्रों तथा पुस्तकों का अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक ऋषियों ने प्रकृति और मानव के मध्य परस्पर निर्भरता, सह-अस्तित्व तथा संतुलित जीवनशैली पर विशेष बल दिया है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वैदिक पर्यावरण चेतना वर्तमान पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान हेतु नैतिक, सांस्कृतिक तथा व्यावहारिक दृष्टि प्रदान करती है। इसके सिद्धांतों को अपनाकर सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण तथा मानव कल्याण की दिशा में सार्थक प्रयास किए जा सकते हैं।

मुख्य शब्द: वैदिक पर्यावरण चेतना, वेद, पर्यावरण संरक्षण, प्रकृति, पंचमहाभूत, जैव विविधता, सतत विकास, पृथ्वी, जल, वायु, वन संरक्षण, प्राकृतिक संसाधन, वैदिक दर्शन, पारिस्थितिक संतुलन, मानव एवं प्रकृति।

प्रस्तावना

पर्यावरण मानव जीवन का मूल आधार है, जिसके बिना जीवन की कल्पना संभव नहीं है। वर्तमान समय में औद्योगीकरण, शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि तथा प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई तथा जैव विविधता के ह्रास जैसी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। इन चुनौतियों के समाधान के लिए केवल वैज्ञानिक एवं तकनीकी उपाय ही पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि ऐसी सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टि की भी आवश्यकता है जो मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलित संबंध स्थापित कर सके। भारतीय वैदिक परंपरा में पर्यावरण को अत्यंत पवित्र एवं जीवनदायी माना गया है। वेदों में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, वनस्पति तथा समस्त जीव-जंतुओं के प्रति श्रद्धा, संरक्षण और संतुलित उपयोग का संदेश दिया गया है। वैदिक ऋषियों ने प्रकृति को माता, देवतुल्य और जीवन के आधार के रूप में स्वीकार करते हुए उसके संरक्षण को मानव का नैतिक कर्तव्य बताया है। वैदिक पर्यावरण चेतना मानव और प्रकृति के बीच सह-अस्तित्व, संतुलन तथा पारस्परिक सहयोग की भावना पर आधारित है। वर्तमान पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में वैदिक विचारों का पुनर्मूल्यांकन अत्यंत प्रासंगिक है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य वैदिक साहित्य में निहित पर्यावरणीय अवधारणाओं का अध्ययन करना तथा आधुनिक पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की दृष्टि से उनकी उपयोगिता का विश्लेषण करना है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य वैदिक साहित्य में निहित पर्यावरण चेतना का विश्लेषण करना तथा आधुनिक पर्यावरणीय समस्याओं के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता का अध्ययन करना है। इस शोध के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि वेदों में प्रकृति, पंचमहाभूत, वनस्पतियों, नदियों, पर्वतों तथा समस्त जीव-जंतुओं के प्रति किस प्रकार सम्मान, संरक्षण और संतुलित उपयोग की भावना व्यक्त की गई है। अध्ययन का उद्देश्य यह भी है कि वैदिक ऋषियों द्वारा प्रतिपादित पर्यावरण संबंधी सिद्धांतों का विश्लेषण कर मानव और प्रकृति के मध्य स्थापित सह-अस्तित्व तथा पारिस्थितिक संतुलन की अवधारणा को स्पष्ट किया जाए। इसके अतिरिक्त, वर्तमान समय में बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन तथा जैव विविधता के ह्रास जैसी समस्याओं के समाधान में वैदिक पर्यावरण चेतना की उपयोगिता का मूल्यांकन करना भी इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है। यह शोध वैदिक विचारों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने, नैतिक मूल्यों को सुदृढ़ करने तथा सतत विकास की भावना को प्रोत्साहित करने का प्रयास करता है। साथ ही, अध्ययन का उद्देश्य यह भी है कि पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा के योगदान को रेखांकित करते हुए उसे समकालीन पर्यावरणीय नीतियों और व्यवहार में अपनाने की आवश्यकता को स्पष्ट किया जाए।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध "वैदिक पर्यावरण चेतना" विषय पर आधारित एक वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक अध्ययन है। इस शोध में द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए आवश्यक सामग्री ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, उपनिषद, भगवद्गीता तथा अन्य वैदिक एवं भारतीय दार्शनिक ग्रंथों से संकलित की गई है। इसके अतिरिक्त पर्यावरण अध्ययन, भारतीय संस्कृति, वैदिक दर्शन तथा सतत विकास से संबंधित पुस्तकों, शोध-पत्रों, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं तथा सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रकाशित रिपोर्टों का भी अध्ययन किया गया है।

संकलित सामग्री का विषयानुसार वर्गीकरण कर उसका तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के दौरान वैदिक साहित्य में वर्णित पर्यावरण संबंधी अवधारणाओं, पंचमहाभूतों के महत्व, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण तथा मानव और प्रकृति के पारस्परिक संबंधों का गहन अध्ययन किया गया। साथ ही, इन सिद्धांतों की वर्तमान पर्यावरणीय चुनौतियों, जैसे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और जैव विविधता के संरक्षण के संदर्भ में उपयोगिता का भी विश्लेषण किया गया है।

इस शोध में किसी प्रकार का प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार अथवा प्रयोगात्मक अध्ययन नहीं किया गया है। संपूर्ण अध्ययन उपलब्ध साहित्य एवं प्रमाणिक स्रोतों के आधार पर किया गया है। इस शोध पद्धति का उद्देश्य वैदिक पर्यावरण चेतना की मूल अवधारणाओं को स्पष्ट करना तथा आधुनिक पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता का वस्तुनिष्ठ एवं तथ्यपरक मूल्यांकन प्रस्तुत करना है।

वैदिक साहित्य का परिचय

वैदिक साहित्य भारतीय संस्कृति, दर्शन एवं ज्ञान परंपरा का सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण आधार माना जाता है। 'वेद' शब्द संस्कृत धातु 'विद्' से बना है, जिसका अर्थ है—ज्ञान या जानना। वेदों को अपौरुषेय अर्थात् मानव-रचित नहीं, बल्कि दिव्य ज्ञान माना गया है। वैदिक साहित्य केवल धार्मिक एवं आध्यात्मिक विषयों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें प्रकृति, समाज, नैतिकता, चिकित्सा, कृषि, शिक्षा, पर्यावरण तथा मानव जीवन के विविध आयामों का व्यापक वर्णन मिलता है। वैदिक साहित्य के चार प्रमुख वेद हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इन चारों वेदों में प्राकृतिक तत्वों, जैसे पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, सूर्य, चंद्रमा, वनस्पति तथा समस्त जीव-जंतुओं के प्रति सम्मान, संरक्षण और संतुलित उपयोग का संदेश दिया गया है।

वैदिक साहित्य के अंतर्गत संहिताओं के अतिरिक्त ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद भी सम्मिलित हैं, जिनमें वैदिक सिद्धांतों की विस्तृत व्याख्या एवं दार्शनिक विवेचना की गई है। उपनिषदों में मानव और प्रकृति के बीच एकात्मता, सह-अस्तित्व तथा समस्त सृष्टि के कल्याण की भावना पर विशेष बल दिया गया है। वैदिक ऋषियों ने प्रकृति को केवल भौतिक संसाधन नहीं, बल्कि जीवनदायिनी शक्ति के रूप में स्वीकार किया और उसके संरक्षण को मानव का नैतिक कर्तव्य बताया। इस प्रकार वैदिक साहित्य में निहित पर्यावरणीय दृष्टिकोण आज भी पर्यावरण संरक्षण, पारिस्थितिक संतुलन तथा सतत विकास के लिए प्रेरणादायक और अत्यंत प्रासंगिक माना जाता है।

वैदिक पर्यावरण चेतना की अवधारणा

वैदिक पर्यावरण चेतना का तात्पर्य उस व्यापक दृष्टिकोण से है, जिसमें प्रकृति और मानव के मध्य परस्पर निर्भरता, सह-अस्तित्व तथा संतुलन को जीवन का मूल आधार माना गया है। वैदिक साहित्य में पर्यावरण को केवल प्राकृतिक संसाधनों का समूह नहीं, बल्कि समस्त सृष्टि के संरक्षण एवं मानव कल्याण का आधार माना गया है। वेदों में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, सूर्य, चंद्रमा, वनस्पतियों, नदियों तथा समस्त जीव-जंतुओं को दैवीय स्वरूप प्रदान करते हुए उनके प्रति सम्मान, कृतज्ञता एवं संरक्षण की भावना व्यक्त की गई है। वैदिक ऋषियों का विश्वास था कि मानव प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसका अभिन्न अंग है और उसका कर्तव्य प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखना है।

वैदिक पर्यावरण चेतना का मूल आधार ऋत (सार्वभौमिक व्यवस्था) की अवधारणा है, जिसके अनुसार सम्पूर्ण सृष्टि एक निश्चित प्राकृतिक नियम और संतुलन के आधार पर संचालित होती है। जब मनुष्य प्रकृति के नियमों का पालन करता है, तब पर्यावरणीय संतुलन बना रहता है, जबकि प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और पर्यावरण का प्रदूषण इस संतुलन को नष्ट कर देता है।

वेदों में यज्ञ, वृक्षारोपण, जल संरक्षण, पशु-पक्षियों के प्रति करुणा तथा प्राकृतिक संसाधनों के संयमित उपयोग पर विशेष बल दिया गया है, जो पर्यावरण संरक्षण की भावना को सुदृढ़ करते हैं।

वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई तथा जैव विविधता के ह्रास जैसी गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं के संदर्भ में वैदिक पर्यावरण चेतना अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होती है। यह मानव को प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व, संतुलित उपभोग, नैतिक आचरण तथा सतत विकास का संदेश देती है। इस प्रकार वैदिक पर्यावरण चेतना केवल धार्मिक या दार्शनिक विचार नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और मानव कल्याण के लिए एक समग्र एवं व्यावहारिक जीवन-दृष्टि है, जो आज भी विश्व समुदाय को प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करती है।

पंचमहाभूत एवं पर्यावरण संरक्षण

वैदिक दर्शन में पंचमहाभूत: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को समस्त सृष्टि तथा मानव जीवन का मूल आधार माना गया है। इन पाँच तत्वों के संतुलन से ही प्रकृति का अस्तित्व और जीवन का संचालन संभव है। वैदिक साहित्य में इन तत्वों को दैवीय स्वरूप प्रदान करते हुए उनके संरक्षण, शुद्धता और संतुलित उपयोग पर विशेष बल दिया गया है। पृथ्वी को माता के समान पालन-पोषण करने वाली माना गया है, इसलिए उसके संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग और संरक्षण आवश्यक बताया गया है। जल को जीवन का आधार मानते हुए नदियों, सरोवरों तथा वर्षा के जल को स्वच्छ और सुरक्षित रखने का संदेश दिया गया है। वायु को प्राणों का आधार माना गया है, इसलिए वायु की शुद्धता बनाए रखना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य माना गया है। अग्नि को ऊर्जा, शुद्धि और परिवर्तन का प्रतीक माना गया है, जिसका संयमित एवं हितकारी उपयोग मानव और प्रकृति दोनों के लिए आवश्यक है। आकाश को समस्त सृष्टि का व्यापक आधार मानते हुए उसके संतुलन और प्राकृतिक व्यवस्था के संरक्षण पर बल दिया गया है।

वैदिक पर्यावरण चेतना के अनुसार पंचमहाभूतों का संतुलन बनाए रखना ही पर्यावरण संरक्षण का मूल आधार है। प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, प्रदूषण तथा पर्यावरण के प्रति असंवेदनशील व्यवहार इन तत्वों के संतुलन को प्रभावित करते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का ह्रास तथा प्राकृतिक आपदाओं जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। अतः वैदिक दृष्टिकोण हमें प्रकृति के प्रति सम्मान, संयमित उपभोग, संरक्षण तथा सतत विकास की भावना अपनाने की प्रेरणा देता है। पंचमहाभूतों के संरक्षण के माध्यम से ही स्वस्थ पर्यावरण, संतुलित पारिस्थितिकी तथा मानव कल्याण सुनिश्चित किया जा सकता है।

वेदों में जल, वायु, पृथ्वी, वन एवं जीव-जंतुओं का महत्व

वैदिक साहित्य में जल, वायु, पृथ्वी, वन तथा जीव-जंतुओं को जीवन के मूल आधार के रूप में स्वीकार किया गया है। वेदों के अनुसार प्रकृति के ये सभी घटक परस्पर जुड़े हुए हैं और इनके संतुलन पर समस्त सृष्टि का अस्तित्व निर्भर करता है। पृथ्वी को माता के समान सम्मान दिया गया है। अथर्ववेद का प्रसिद्ध मंत्र "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" यह संदेश देता है कि पृथ्वी हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं। इसलिए उसका संरक्षण, संवर्धन तथा संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग प्रत्येक मानव का नैतिक कर्तव्य है।

जल को जीवन का मूल स्रोत माना गया है। ऋग्वेद एवं यजुर्वेद में जल की पवित्रता, शुद्धता तथा औषधीय गुणों का वर्णन मिलता है। जल को प्रदूषित न करने तथा उसके संरक्षण का संदेश वैदिक साहित्य में स्पष्ट रूप से निहित है। इसी प्रकार वायु को प्राणों का आधार माना गया है। शुद्ध वायु को स्वस्थ जीवन के लिए अनिवार्य बताया गया है और उसके संरक्षण पर विशेष बल दिया गया है। वायु की शुद्धता बनाए रखना केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व भी माना गया है।

वेदों में वनों और वृक्षों को पर्यावरण संतुलन, वर्षा, औषधि तथा जीवन-निर्वाह का आधार माना गया है। वृक्षों को देवतुल्य मानकर उनके संरक्षण और संवर्धन की प्रेरणा दी गई है। औषधीय वनस्पतियों का वर्णन विशेष रूप से अथर्ववेद में मिलता है, जो प्रकृति और मानव स्वास्थ्य के गहरे संबंध को दर्शाता है। इसके साथ ही जीव-जंतुओं को भी सृष्टि का अभिन्न अंग माना गया है। उनके प्रति दया, करुणा और संरक्षण की भावना पर बल दिया गया है, क्योंकि जैव विविधता का संरक्षण ही पारिस्थितिक संतुलन का आधार है। इस प्रकार वेदों में जल, वायु, पृथ्वी, वन तथा जीव-जंतुओं के प्रति सम्मान, संरक्षण और संतुलित उपयोग का संदेश दिया गया है, जो आज के पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक एवं प्रेरणादायक है।

वर्तमान पर्यावरणीय संकट एवं वैदिक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता

वर्तमान समय में विश्व अनेक गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहा है। जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापवृद्धि, वायु एवं जल प्रदूषण, वनों की कटाई, भूमि क्षरण, जैव विविधता का ह्रास तथा प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन मानव अस्तित्व के लिए गंभीर संकट बन चुके हैं। तीव्र औद्योगीकरण, शहरीकरण, बढ़ती जनसंख्या, उपभोक्तावादी जीवनशैली तथा प्राकृतिक संसाधनों के असंतुलित उपयोग ने पर्यावरणीय संतुलन को प्रभावित किया है। इन समस्याओं के परिणामस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि, जल संकट, खाद्य असुरक्षा तथा विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ निरंतर बढ़ रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में केवल तकनीकी समाधान पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी, नैतिक और संतुलित जीवन-दृष्टि की भी आवश्यकता है।

वैदिक दृष्टिकोण मानव और प्रकृति के बीच सह-अस्तित्व, पारस्परिक सहयोग तथा संतुलित जीवनशैली पर आधारित है। वेदों में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, वनस्पतियों और समस्त जीव-जंतुओं को दैवीय स्वरूप प्रदान करते हुए उनके संरक्षण का संदेश दिया गया है। वैदिक ऋषियों ने प्रकृति के अंधाधुंध दोहन के स्थान पर उसके विवेकपूर्ण एवं संतुलित उपयोग पर बल दिया है। 'ऋत' की अवधारणा प्राकृतिक व्यवस्था और संतुलन को बनाए रखने की प्रेरणा देती है, जबकि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का सिद्धांत सम्पूर्ण विश्व और समस्त जीव-जगत को एक परिवार के रूप में देखने की भावना विकसित करता है। ये सिद्धांत पर्यावरण संरक्षण के लिए नैतिक आधार प्रदान करते हैं।

वर्तमान संदर्भ में वैदिक पर्यावरण चेतना की प्रासंगिकता इसलिए भी बढ़ जाती है क्योंकि यह सतत विकास, संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, जैव विविधता के संरक्षण तथा प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित करती है। यदि वैदिक मूल्यों को आधुनिक पर्यावरणीय नीतियों, शिक्षा तथा जन-जागरूकता कार्यक्रमों में समुचित स्थान दिया जाए, तो पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रभावी परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। इस प्रकार वैदिक दृष्टिकोण केवल प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान के लिए एक व्यावहारिक, नैतिक एवं वैज्ञानिक रूप से प्रासंगिक जीवन-दृष्टि भी है।

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वैदिक पर्यावरण चेतना मानव और प्रकृति के बीच संतुलित, सामंजस्यपूर्ण तथा उत्तरदायी संबंध स्थापित करने पर आधारित है। वैदिक साहित्य में पर्यावरण को केवल प्राकृतिक संसाधनों का स्रोत नहीं, बल्कि समस्त जीवन का आधार माना गया है। अध्ययन के दौरान यह ज्ञात हुआ कि वेदों में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, वनस्पतियों तथा जीव-जंतुओं के संरक्षण पर विशेष बल दिया गया है। पंचमहाभूतों की अवधारणा, ऋत का सिद्धांत तथा प्रकृति के प्रति श्रद्धा और संयमित उपभोग की भावना आज भी पर्यावरण संरक्षण के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। वर्तमान समय में बढ़ते प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई तथा जैव विविधता के ह्रास जैसी समस्याएँ इस बात की ओर संकेत करती हैं कि मानव और प्रकृति के बीच संतुलन पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि वैदिक पर्यावरण चेतना केवल धार्मिक या दार्शनिक विचार नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करती है। यदि वैदिक सिद्धांतों को आधुनिक पर्यावरणीय शिक्षा, नीतियों तथा जन-जागरूकता कार्यक्रमों में समुचित रूप से शामिल किया जाए, तो पर्यावरण संरक्षण के प्रयास अधिक प्रभावी हो सकते हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि वैदिक पर्यावरण चेतना वर्तमान पर्यावरणीय संकट के समाधान के लिए एक नैतिक, सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करती है, जो मानव और प्रकृति के मध्य दीर्घकालीन संतुलन स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि वैदिक पर्यावरण चेतना भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, जो मानव और प्रकृति के बीच संतुलित, नैतिक एवं सह-अस्तित्वपूर्ण संबंध स्थापित करने पर बल देती है। वैदिक साहित्य में पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश, वनस्पतियों तथा समस्त जीव-जंतुओं को जीवन के आधार के रूप में स्वीकार करते हुए उनके संरक्षण और संवर्धन का स्पष्ट संदेश दिया गया है। पंचमहाभूत, ऋत तथा वसुधैव कुटुम्बकम् जैसी अवधारणाएँ पर्यावरणीय संतुलन, प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग तथा समस्त जीव-जगत के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित करती हैं।

वर्तमान समय में बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जैव विविधता के ह्रास तथा प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित दोहन जैसी समस्याओं के समाधान के लिए वैदिक दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है। यह दृष्टिकोण केवल पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा नहीं देता, बल्कि संतुलित जीवनशैली, संयमित उपभोग तथा प्रकृति के प्रति सम्मान की भावना विकसित करने की प्रेरणा भी प्रदान करता है। यदि वैदिक पर्यावरणीय मूल्यों को शिक्षा, सामाजिक जीवन तथा पर्यावरणीय नीतियों में समुचित स्थान दिया जाए, तो सतत विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान मिल सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि वैदिक पर्यावरण चेतना वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए स्वच्छ, सुरक्षित एवं संतुलित पर्यावरण के निर्माण की दिशा में एक प्रभावी, प्रेरणादायक और व्यावहारिक मार्गदर्शक सिद्ध होती है।

संदर्भ

1. अथर्ववेद। (2014)। *अथर्ववेद* (आर. टी. एच. ग्रिफ़िथ द्वारा अंग्रेज़ी अनुवाद)। मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।
2. भगवद्गीता। (2018)। *भगवद्गीता* (स्वामी गम्भीरानन्द द्वारा अनुवादित)। अद्वैत आश्रम।
3. दाश, एस. (2019)। वैदिक साहित्य में पर्यावरणीय नैतिकता। *International Journal of Research in Social Sciences, 9*(4), 45–53।
4. ग्रिफ़िथ, आर. टी. एच. (अनुवादक)। (2014)। *ऋग्वेद*। मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।
5. ग्रिफ़िथ, आर. टी. एच. (अनुवादक)। (2015)। *यजुर्वेद*। मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।
6. ग्रिफ़िथ, आर. टी. एच. (अनुवादक)। (2015)। *सामवेद*। मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।
7. काणे, पी. वी. (2015)। *धर्मशास्त्र का इतिहास* (खंड 2)। भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट।
8. पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय। (2023)। *भारत पर्यावरण स्थिति रिपोर्ट*। भारत सरकार।
9. पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय। (2022)। *राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना*। भारत सरकार।
10. राधाकृष्णन, एस. (2008)। *प्रमुख उपनिषद*। हार्परकॉलिन्स इंडिया।
11. शर्मा, आर. एन. (2018)। *वैदिक पारिस्थितिकी और पर्यावरणीय जागरूकता*। कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।
12. सिंह, आर. (2020)। वेदों में पर्यावरणीय चेतना: एक दार्शनिक अध्ययन। *Journal of Indian Philosophy and Religion, 25*(2), 75–90।
13. तिवारी, के. एन. (2017)। *प्राचीन भारतीय चिंतन में पर्यावरण नैतिकता*। डी. के. प्रिंटवर्ल्ड, नई दिल्ली।
14. यूनेस्को। (2021)। *सतत विकास के लिए शिक्षा: एक रूपरेखा*। यूनेस्को प्रकाशन।
15. उपनिषद। (2016)। *प्रमुख उपनिषद* (एस. राधाकृष्णन द्वारा अनुवादित)। हार्परकॉलिन्स इंडिया।
16. विश्व स्वास्थ्य संगठन। (2022)। *स्वास्थ्य और पर्यावरण: जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य*। WHO।